KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 2

Satyaveer Yadav

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

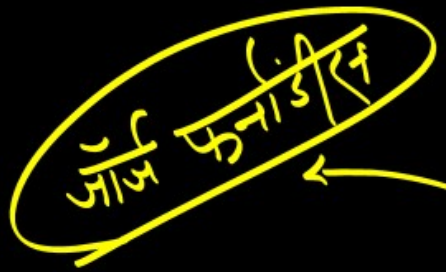
बिहार का आंदोलन

मार्च 1974 में छात्रों ने छेड़ा आंदोलन

- बढ़ती कीमतें खाद्यान्न का अभाव बेरोजगारी और भ्रष्टाचार
- जयप्रकाश नारायण को बुलावा (जेपी - लोकनायक)
  - निमंत्रण स्वीकार लेकिन शर्त
    - आंदोलन अहिंसक रहेगा और अपने को सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं रखेगा
      - इस प्रकार छात्र आंदोलन ने राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया
  - सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक दायरे में सम्पूर्ण क्रांति का आहवान
  - बिहार की कांग्रेस सरकार को बर्खास्त करने की मांग

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- आंदोलन का प्रभाव राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ना शुरू हुआ।
- जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन के साथ ही साथ रेलवे के कर्मचारियों ने भी एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।
- इससे रोजमर्रा के कामकाज ठप्प हो जाने का खतरा।
- 1975 में जेपी ने जनता के 'संसद मार्च' का नेतृत्व किया।
- जयप्रकाश नारायण को अब भारतीय जनसंघ, कांग्रेस (O) भारतीय लोकदल, सोशलिस्ट पार्टी जैसे गैर-कांग्रेसी दलों ने समर्थन किया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जेपी द्वारा आंदोलन की अपनायी गयी रणनीति की आलोचनाएँ :-

- गुजरात और बिहार, दोनों ही राज्यों के आंदोलन को कांग्रेस विरोधी माना गया।
- कहा गया कि ये आंदोलन राज्य सरकार के खिलाफ नहीं अपितु इंदिरा गांधी के खिलाफ चलाये गये हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

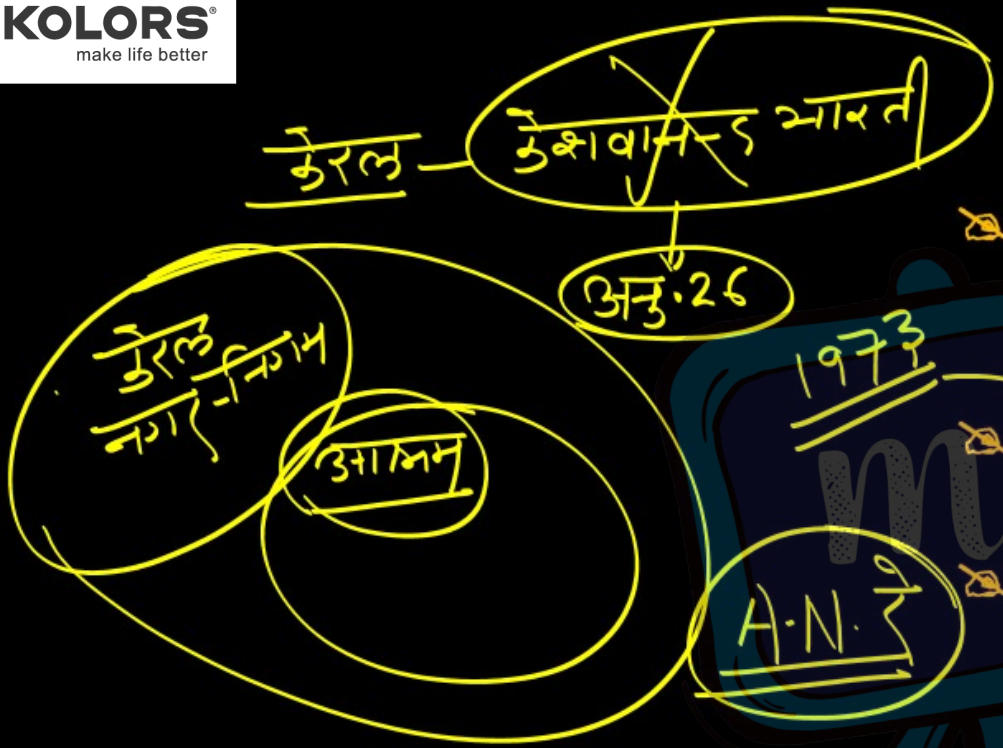
न्यायपालिका से संघर्ष

तीन संवैधानिक मसलें :-

1. क्या संसद मौलिक अधिकारों में कटौती कर सकती है।
   SC - सरकार ऐसा नहीं कर सकती।
2. क्या संसद संविधान में संशोधन करके संपत्ति के अधिकार में काँट-छांट कर सकती है?
   SC - सरकार संविधान में इस तरह का संशोधन नहीं कर सकती कि अधिकारों की कटौती की जाये।
3. संसद ने यह कहते हुए संविधान में संशोधन किया कि वह नीति-निर्देशक सिद्धांतों को प्रभावकारी बनाने के लिए मौलिक अधिकारों में कमी कर सकती है।
   SC ने इसे भी निरस्त किया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इससे सरकार और न्यायपालिका के बीच तनाव आया।

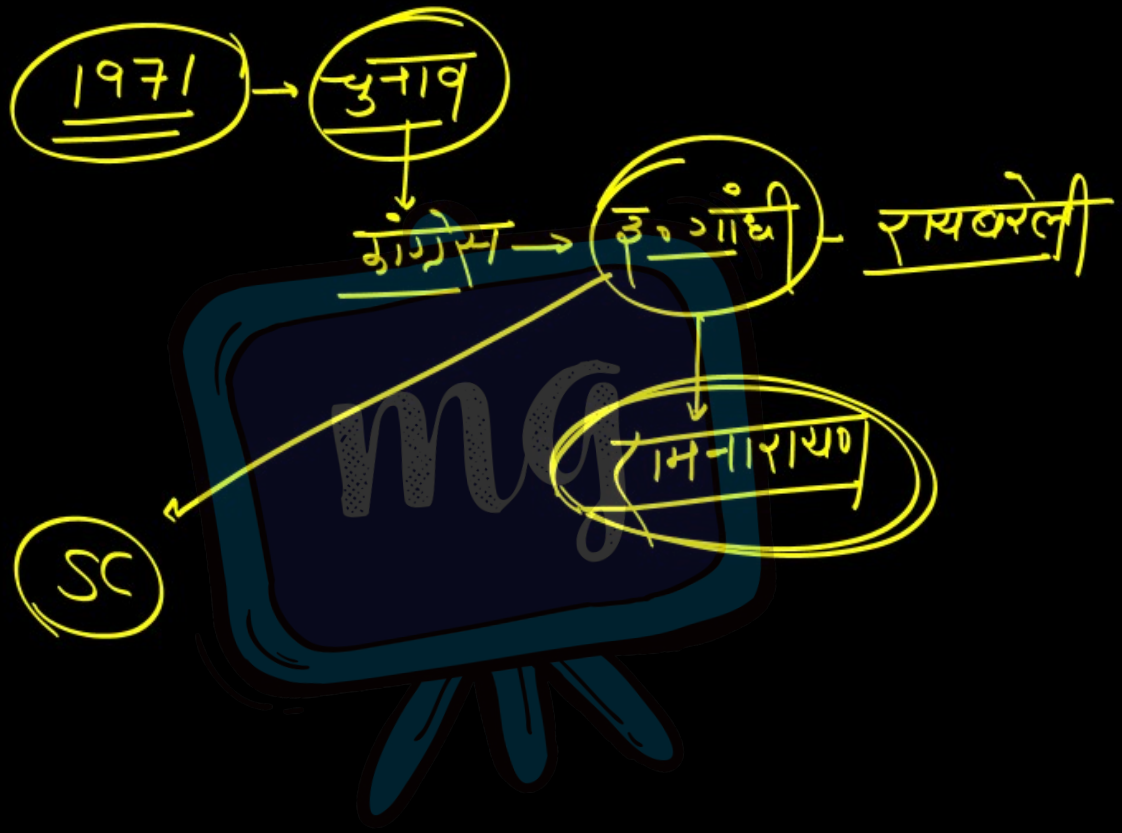
संकट की परिणति - केशवानंद भारती मुकदमा।

- 1973 में केशवानंद भारती के फैसले के तुरंत बाद मुख्य न्यायाधीश का पद खाली हुआ।
- सरकार ने तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी करके न्यायमूर्ति ए. एन. के. को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया।
- जिन तीन न्यायाधीशों की अनदेखी की गयी उन्होंने सरकार के इस फैसले के विरुद्ध निर्णय दिया।

इस संघर्ष का चरमबिंदु - एक उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध करार

12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला

- न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा
- समाजवादी नेता राजनारायण द्वारा दायर चुनाव याचिका के मामले में
  - इंदिरा गांधी के निर्वाचन को चुनौती तर्क – चुनाव प्रचार में सरकारी कर्मचारियों की सेवा का इस्तेमाल किया गया।

इंदिरा गांधी अब कानूनन सांसद नहीं रहीं

- 6 माह की अवधि में सांसद निर्वाचित नहीं होती है तो प्रधानमंत्री नहीं रह सकती

24 जून 1975 को सर्वोच्च न्यायालय का इस फैसले पर आंशिक स्थगनादेश

- इस फैसले को लेकर की गई अपील की सुनवाई नहीं होगी तब तक इंदिरा गांधी सांसद बनी रहेंगी लेकिन वे लोकसभा की कार्यवाही में भाग नहीं ले सकती।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संकट

- जयप्रकाश नारायण की अगुवाई में विपक्षी दलों ने इंदिरा गांधी के इस्तीफे के लिए दबाव बनाया।
- इन दलों ने 25 जून 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल प्रदर्शन किया।
- जेपी ने सेना, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सरकार के अनैतिक और अवैधानिक आदेशों की पालना ना करें।